BENNETT, COLEMAN & CO. LTD. | Estd. 1838 | VOL. 44 NO. 191 LUCKNOW | SATURDAY, AUGUST 15, 2026 | PAGES 184 | CAPITAL | PRICE ₹5.00

THE TIMES OF INDIA

HAPPY INDEPENDENCE DAY

BUMPER ISSUE: INCLUSIVE OF LUCKNOW TIMES (CITY ONLY), SECOND SECTION, LEADERS OF CHANGE PULLOUTS

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

In response to Pak PM's remarks on Indus Treaty, J&K CM Omar Abdullah says it sucked 'our blood', calls for its cancellation

Cancer screening key to saving lives: Experts

Lucknow: An awareness session on cancer screening and early diagnosis was held in a city hospital on Friday.

The sessions covered cancer warning signs, targeted chemotherapy, oral cancer and tobacco-related risks, breast cancer screening and treatment, cervical cancer screening, and HPV vaccination.

The programme was organised at Era Lucknow Medical College under the 'Anandi Maa – Ek Jeevan Bachao Abhiyan' and 'Cancer-Free India Yatra', in association with the Cancer Aid Society.

Vice-chancellor Prof Abbas Ali Mehdi said cancer prevention should remain a priority and called for greater public awareness and timely screening. TNN

शनिवार, 15 अगस्त 2026
WATCH GOD WATCHDOG
Vol.8 no.222

हरियाली तीज
की हार्दिक
शुभकामनाएं

NBT
नवभारत टाइम्स

subscribe.timesofindia.com

'तनाव कैंसर के बड़े कारणों में एक'

■ **NBT न्यूज, लखनऊ :** एरा यूनिवर्सिटी में शुक्रवार को 'आनंदी मां-एक जीवन बचाओ अभियान एवं कैंसर मुक्त भारत यात्रा' के तहत कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ। वीसी प्रो. डॉ. अब्बास अली महदी ने कहा कि बीमारी को होने से पहले रोकना जरूरी है। तनाव भी कैंसर के बड़े कारणों में शामिल है। केमिकल, फिजिकल, बायोलॉजिकल और इमोशनल हर तरह का तनाव शरीर में विकार पैदा कर सकता है।

15th अगस्त स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता की पहली किरण का साक्षी

लखनऊ एवं कानपुर से प्रकाशित

स्वतंत्र भारत

लखनऊ, शनिवार, 15 अगस्त 2026, श्रावण मास शुक्ल पक्ष 3, सं. 2083 वि., वर्ष 80, अंक - 01, पृष्ठ 16, संस्करण : नगर मूल्य : 4 रुपये

कैंसर जागरूकता पर कार्यक्रम, महिलाओं को टीकाकरण के लिए किया प्रेरित

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। एरा लखनऊ मेडिकल कॉलेज के रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग ने कैंसर एड सोसाइटी और स्त्री कल्याण फाउंडेशन के सहयोग से 'आनंदी मां योजना- कैंसर मुक्त उत्तर प्रदेश' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य अतिथि वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के डीन ऑफ मेडिकल साइंसेज डॉ. डेमियन कोहॉल रहे। एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अब्बास अली मेहंदी ने निवारक ऑन्कोलॉजी पर विचार रखे, जबकि प्रो-वाइस चांसलर प्रो. फरजाना मेहंदी ने सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों के महत्व पर जोर दिया। एरा एजुकेशनल ट्रस्ट के डायरेक्टर व प्रो चांसलर मीसम अली खान ने बताया कि एरा मेडिकल कॉलेज में रेडिएशन, सर्जरी और कीमोथेरेपी से कैंसर उपचार की सुविधाएं उपलब्ध हैं तथा आयुष्मान भारत योजना के तहत भी मरीजों को उपचार का लाभ मिल रहा है। विशेषज्ञों डॉ. आशीष उपाध्याय, डॉ. रौनक कुमार गुप्ता, डॉ. इंद्रजीत गुप्ता और डॉ. तरुणा सिंह ने विभिन्न कैंसर के लक्षण, बचाव, जांच और उपचार की जानकारी दी। कैंसर एड सोसाइटी के सचिव डॉ. पीयूष गुप्ता, सीनियर डायरेक्टर प्रीती गुप्ता और स्त्री कल्याण फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुमेधा नीलू त्रिवेदी सहित चिकित्सा विशेषज्ञों ने महिलाओं को समय पर जांच और एचपीवी टीकाकरण के प्रति जागरूक किया।

इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, शनिवार, 15 अगस्त 2026

वर्ष 18 अंक 344 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

जो व्यक्ति भी विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रूढ़िवादी चीज की आलोचना करनी होगी, उसमें अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी।
-भगत सिंह

तापमान - अधिकतम 36.5°C (-3.0) न्यूनतम 29.0°C(+1.6) सेंसेक्स 78,079.96 (+113.61) निफ्टी 24,395.85 (-040.10) सोना 1,53,750 चांदी 2,55,000 मुद्रा - डालर 95.41 दिरहम 25.98 रियाल 25.44

जागरुकता ही कैंसर से सबसे बड़ा बचाव है

'आनंदी मां योजना' के तहत एरा मेडिकल कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

लखनऊ (ब्यूरो)। 'आनंदी मां- एक जीवन बचाओ अभियान एवं कैंसर मुक्त भारत यात्रा' पर एरा लखनऊ मेडिकल कॉलेज में शुक्रवार को जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आए विशेषज्ञों और चिकित्सा क्षेत्र के जानकारों के विचारों के बाद ये तथ्य उभर कर सामने आये कि जागरुकता ही कैंसर से सबसे बड़ा बचाव है। कैंसर की रोकथाम केवल अस्पतालों की जिम्मेदारी नहीं है। खुद भी सचेत रहें। शरीर में होने वाले बदलावों को नजरंदाज न करें और समय पर जांच करवाकर मृत्यु दर को घटाया जा सकता है। एरा मेडिकल कॉलेज का आंकोलॉजी विभाग भी कैंसर मुक्त भारत यात्रा का हिस्सा बन चुका है। सरकारी चिकित्सीय संस्थानों के साथ ही एरा भी कैंसर के प्रति जागरुकता फैलाने और पीड़ितों के इलाज में कोई कसर बाकी नहीं रख रहा है। इस दौरान विशेषज्ञों ने कैंसर की रोकथाम और शुरुआती जांच के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान भी दिये। इस कार्यक्रम में कैंसर ऐड सोसाइटी और स्त्री कल्याण फाउंडेशन भी सहभागी रही। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय के

- **कैंसर की रोकथाम और शुरुआती जांच के विभिन्न पहलुओं पर दिये गये व्याख्यान**
- **कैंसर को समाप्त करने और उसकी रोकथाम पर देश विदेश के विशेषज्ञों ने किया मंथन**

मेडिकल साइंसेज संकाय के डीन और फार्माकोलॉजी विभाग के सीनियर लेक्चरर डॉ. डेमियन कोहल ने किया।

डॉ. कोहल ने कहा कि यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मुझे न केवल इस महत्वपूर्ण बैठक में शामिल होने का अवसर मिला बल्कि कुलपति और उनके कैबिनेट अधिकारियों के अतिथि के रूप में आपके विश्वविद्यालय आने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी ऑफ द वेस्टइंडीज वहीं स्थित है जहां से महान क्रिकेटर आते हैं। इसके अलावा, हम भारत के साथ कई महत्वपूर्ण समानताएं साझा करते हैं। उन्होंने मेडिकल साइंसेज संकाय में अपने कार्य अनुभव और औषधीय पौधों, चिकित्सा में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों तथा क्षेत्रीय फार्मास्यूटिकल विकास से जुड़े कार्यों पर विचार साझा किए। इस दौरान विशेषज्ञों ने कैंसर की रोकथाम और शुरुआती जांच के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए।

एरा यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. डॉ. अब्बास अली महदी ने कहा कि कैंसर ऐड सोसाइटी के साथ हम पिछले कई वर्षों से जुड़े हुए हैं। वास्तव में होता क्या है कि बुनियादी तौर पर जागरूकता की भारी कमी है। जैसा आप जानते हैं कि भारत की आबादी दुनिया में सबसे अधिक है। हमारे यहां अशिक्षा और जागरूकता की काफी कमी है जिससे बहुत सारी समस्याएं पैदा होती हैं। यहां तक कि जो लोग शिक्षित हैं वे भी कई बातों से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। इसलिए इस बात पर चर्चा करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमारे संस्थान में अब कैंसर के इलाज की बहुत अच्छी सुविधा उपलब्ध है। हमारे पास मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट हैं, रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट हैं और सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट भी हैं। सभी विभाग मौजूद हैं। लेकिन मेरी चिंता हमेशा यही रहती है कि हम इलाज की नौबत ही क्यों आने दें। हम इससे बचाव क्यों न करें, हम इसे होने से पहले ही क्यों न रोकें। उन्होंने कहा कि किसी भी बीमारी का मुख्य कारण तनाव होता है और कैंसर के सबसे बड़े कारणों में से एक तनाव ही है। चाहे वह केमिकल स्ट्रेस हो, फिजिकल स्ट्रेस हो, बायोलॉजिकल स्ट्रेस हो या फिर इमोशनल स्ट्रेस। यह सभी प्रकार का तनाव शरीर में विकार पैदा करता है। इसलिए तनाव से बचाव बहुत आवश्यक है। एरा मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. डॉ. जमाल मसूद ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। कैंसर रोग विशेषज्ञ आशीष उपाध्याय ने कैंसर के चेतावनी संकेतों पर जानकारी दी। उन्होंने कैंसरों के प्रकारों के साथ ही टारगेटेड कीमोथिरैपी पर व्याख्यान दिया। जबकि डॉ. रौनक कुमार गुप्ता ने मुंह के कैंसर, तंबाकू से जुड़े खतरों और शीघ्र निदान पर चर्चा की। डॉ. इंद्रजीत गुप्ता ने स्तन कैंसर की जांच एवं उपचार तथा डॉ. तरुणा सिंह ने गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की जांच और शीघ्र निदान पर अपने विचार रखे। कैंसर एंड सोसाइटी के सचिव डॉ. पीयूष गुप्ता ने कैंसर की रोकथाम में सामुदायिक भागीदारी के महत्व और अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में एचपीवी टीकाकरण से जुड़े भ्रम एवं तथ्यों तथा कैंसर की जांच और शीघ्र निदान पर पैनल चर्चा भी आयोजित हुई। इसमें ईएनटी, सर्जरी, स्त्री रोग, मेडिसिन, न्यूरोसर्जरी, पैथोलॉजी और ऑर्थोपेडिक्स विभागों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। एरा के रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग ने इस पहल के माध्यम से निवारक ऑन्कोलॉजी और सामुदायिक पहुंच के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। साथ ही 'आनंदी मां योजना' नेटवर्क से जुड़ी महिलाओं में कैंसर के प्रति समय पर जागरुकता और कार्यों को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया। इस मौके पर एरा यूनिवर्सिटी की प्रो. वाइस चांसलर प्रो. फरहान महदी समेत बड़ी संख्या में डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ उपस्थित रहा।

सिर्फ इलाज ही नहीं, जागरुकता भी फैलाएं डॉक्टर : डॉ. सुमेधा

स्त्री वेलफेयर फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. सुमेधा ने बताया कि हमारे मेडिकल छात्र जो कि आने वाले कल के हमारे युवा डॉक्टर्स भी बनके तैयार होंगे, भविष्य के स्वास्थ्यकर्ता भी बनके तैयार होंगे। अगर अपने पेशे के साथ वह यह अपनाए कि सिर्फ इलाज ही नहीं, जागरुकता फैलाना भी उनके जीवन का अहम किरदार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कैंसर की शुरुआत जब होती है तो शरीर में बदलाव आने लगते हैं। लोग कहते हैं कि कैंसर वैसे तो 'साइलेंट किलर' है लेकिन आने से पहले वह बेल यानी घंटी जरूर बजाता है। जैसे कोई मेहमान आता है बेल बजाता है ना, वैसे ही कैंसर भी बेल बजाता है लेकिन उस बेल को सुनते कितने लोग हैं? उसको सुनने के लिए कैंसर जागरुकता अभियान को संचालित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज यहां सिर्फ यह कार्यक्रम आयोजित नहीं हो रहा है, यह एक संकल्प है। आप यहां से सब एक संकल्प लेकर के जाइए कि कैंसर जागरुकता सिर्फ कागजों पर नहीं, जमीनी स्तर पर अपनाना है।

कैंसर इलाज के लिए पूरी तरह सक्षम है एरा : मीसम अली खान

एरा यूनिवर्सिटी के उप कुलाधिपति मीसम अली खान ने कहा कि हमारे पास सभी हाईटेक जांच मशीनें उपलब्ध हैं। कैंसर का इलाज करने लिए एरा पूरी तरह से सक्षम है। मैंने लगभग सभी एचओडी, रेजिडेंट्स, नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ को यहां बुलाया है ताकि आप सभी इस बात का प्रसार कर सकें।

उन्होंने कहा कि सबसे आसान तरीका यह है कि पहले आप अपने संस्थान के अंदर के लोगों को बताएं। एरा मेडिकल कॉलेज में ओपीडी में प्रतिदिन 2000 से अधिक मरीज आते हैं। यदि हम उन्हें बताना शुरू करेंगे तो मुझे लगता है कि कैंसर के प्रति जागरुकता तेजी से फैलेगी। उन्होंने कहा कि कैंसर इलाज के लिए कैंसर रोग के विशेषज्ञ हैं और सबसे बड़ी बात इलाज महंगा नहीं हैं। जहां तक शुल्क का सवाल है तो काफी हद तक हम आयुष्मान भारत योजना के तहत मरीजों को सुविधाएं दे रहे हैं। हमने गायनकोलॉजी में एसएमएस की व्यवस्था शुरू की थी जो दो महीने से काफी सुचारु चल रही है। अन्य मेडिकल कॉलेज भी हमारे मॉडल को अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ ने इसे शुरू भी कर दिया है और कुछ मुझसे पूछ रहे हैं कि इसे कैसे लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि केजीएमयू, लोहिया और पीजीआई जैसा हर संस्थान पूरी तरह भरा हुआ है क्योंकि वे अपनी अधिकतम क्षमता पर काम कर रहे हैं। इसलिए कैंसर को लेकर एरा में यह एक नयी शुरुआत है।

कैंसर के इलाज की आधुनिक पद्धति 'टारगेटेड कीमोथिरैपी'

एरा यूनिवर्सिटी के कैंसर रोग विशेष डॉ. आशीष उपाध्याय ने सामान्य कीमोथिरैपी और टारगेटेड कीमोथेरेपी का अंतर बताया। उन्होंने अपने प्रेजेंटेशन में बताया कि कैंसर के इलाज की एक आधुनिक पद्धति है जिसमें दवा का लक्ष्य कैंसर कोशिकाओं की विशिष्ट विशेषताओं या प्रोटीन जीन में हुए बदलावों को बनाना होता है। इसका उद्देश्य कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि और फैलाव को रोकना है। उन्होंने बताया कि सामान्य कीमोथेरेपी तेजी से बढ़ने वाली कई कोशिकाओं को प्रभावित कर सकती है। टारगेटेड कीमोथिरैपी हर कैंसर मरीज के लिए उपयुक्त नहीं होती। पहले बायोप्सी या मॉलिक्यूलर या जेनेटिक टेस्ट से देखा जाता है कि कैंसर में ऐसा टारगेट मौजूद है या नहीं।